

Bharata Aura Angrejishiksha

——
भारत और अंग्रेजीशिक्षा

——
Document Information



Text title : Bharata Aura A.ngrejishiksha

File name : bhArataauraangrejIshikShA.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



—
—
भारत और अंग्रेजीशिक्षा
—
—

अंग्रेजी से ही हो सकता भारत का उत्थान,
पश्चिम की संस्कृति से ही है संभव जन-कल्याण ।
यह विचार है महामूढता महा अन्ध-विश्वास,
यथाशीघ्र ही हमें चाहिए करना इसका नाश । १
अंग्रेजी ही अखिल विश्व में उन्नत भाषा एक,
यह नितान्त है भ्रान्त धारणा और महा अविवेक ।
रूस चीन जापान आदि हैं ऐसे देश महान,
जहाँ नहीं अंग्रेजी का है कोई भी सम्मान । २
हिन्दी संस्कृत और हमारी प्रादेशिक भाषायें-
यही देश की कर सकती हैं पूरी सब आशायें ।
इनकी ही उन्नति में हम सब सारी शक्ति लगावें,
अंग्रेजी से भी बढ़कर हम इन्हें समर्थ बनावें । ३
अंग्रेजों के कभी दास्य से मुक्त हो गया देश,
अंग्रेजी की किन्तु दासता अव भी है अवशेष ।
हिन्दी-संस्कृत की उन्नति में यही बड़ी है बाधक,
सब मिल दूर भगावें इसको भारत के हितसाधक । ४

- रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

